[redacted] [redacted]

वर्ष-१७ अंक-०२
२७ फरवरी २०१९

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2018-20
एक प्रति- २०.०० रु.

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्
वैदिक रवि
मासिक

वर्ष 17 अंक–02

27 फरवरी 2019
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 194

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गाँधी
कार्या. फोन : 0755 4220549

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन : 07324 226566

सह सम्पादक
श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा

सदस्यता
एक प्रति – 20–00 रू.
वार्षिक – 200–00 रू.
आजीवन – 1000–00 रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3	500 रू.
पूर्ण पृष्ठ (अन्दर)	400 रू.
आधा पृष्ठ (अन्दर का)	250 रू.
चौथाई पृष्ठ	150 रू.

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	**सम्पादकीय**	4
2.	क च ट त प वर्गस्थ प्रभु	8
3.	गाय सर्वोत्तम क्यों ?	9
4.	महर्षि बोधोत्सव पर	10
5.	बोधकथा	12
6.	आत्म साधना की अलौकिक यात्रा	14
7.	अथ मनु महिमा	16
8.	कभी जीवन की बेलेंस शीट भी बनाओ	18
9.	होली – कविता	21
10.	स्वाध्याय की महिमा	24
11.	समाचार – आदिवासी क्षेत्र में......	26

मार्च माह के पर्व त्यौहार एवं जयन्ती

ऋषि बोधोत्सव (महा शिवरात्रि)	4
होली	21

सम्पादकीय :

सामाजिकता की सूखती हुई बेल–एक ज्वलन्त समस्या

इस शीर्षक को पढ़ने के पहले समाज से एक प्रश्न है – **क्या हम सामाजिक हैं ?**

इसलिए पहले यह जानना आवश्यक है कि समाज का अर्थ क्या है ? चौंकिए मत, जरा इस पर गंभीरता से विचार करें और फिर निर्णय करें। किसी वस्तु, व्यक्ति, जाति के संबंध में उसके प्रति निर्मित धारणा संख्या की बहुतायत के आधार पर प्राप्त की जाती है। जैसे किसी टोकरी में बहुत से आम रखें हैं, उनमें से अधिकांश खट्टे हैं और कुछ मीठे भी हैं। मान लीजिए, खट्टे आमों का प्रतिशत 90% है और अच्छे मीठे आमों का प्रतिशत 10% है या और भी कम है, तो ऐसी स्थिति में आम की टोकरी के बारे में जब कोई पूछे तो अपनी धारणा बनायेगा उसके अनुसार टोकरी के आम खट्टे हैं, वह बतायेगा। ठीक इसी प्रकार समाज के बारे में मूल्यांकन उसके अधिकांश व्यक्तियों की वर्तमान स्थिति को देखकर ही किया जाना चाहिए। अपवाद तो सभी जगह पाए जाते हैं, इस भीड़ में निश्चित ही कुछ ऐसे भी हैं जिनके जीवन में सामाजिक गुणवत्ता के महत्वपूर्ण तथ्य पाए जाते हैं। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी जो महामना समाज की गरिमा बनाए हुए हैं वास्तव में धन्य हैं, स्तुत्य हैं।

किन्तु आज विकृति से घिरे समाज का अधिकांश तपका जिस विचारधारा में लिप्त है यही समाज के मूल्यांकन की प्रमाणिकता का आधार मानना होगा।

शीर्षक को ठीक से समझने के लिए उसे दो प्रकार से समझना होगा। पहला सामाजिक कौन और दूसरा असामाजिक कौन ?

सामाजिक कौन है, इसे जानने के लिए समाज के प्रमुख लक्षणों को समझना होगा, वे कौन से कारण हैं, गुण हैं, आदर्श हैं जिनसे समाज का महत्व है। पहले इसी पर थोड़ा चिन्तन करते हैं।

विचार करने के पूर्व हमारे लिए यह भी जानना आवश्यक है कि समाज है क्या ? उत्तर साधारण सा है, मनुष्यों के समूह को समाज माना जाता हैं। जिसमें सभ्यता, संस्कार, सहयोग, संगठन हो, जो जीवन लक्ष्य से पूर्ण हो।

इस उत्तर में मनुष्य शब्द का प्रयोग किया है, जैसे माला का नाम मस्तिष्क में आते ही हमारी कल्पना में फूलों की या मोतियों का स्वरूप सामने आता है। जहां बहुत से फूल का मोती माला में पिरोए जाते हैं, वह माला कहलाती है। समाज की परिभाषा में भी मानव समूह को समाज कहते हैं। **समूह तो हो परन्तु मनुष्यों का हो।** पशु–पक्षी भी काफी संख्या में एक साथ देखे जाते हैं किन्तु उन्हें समाज की उपमा नहीं दी जाती है। मानवीय गुण विशेष के कारण मनुष्यों के समूह को ही समाज कहा जाता है, और यह ठीक भी है। गाय आदि पशुओं के झुण्ड को संस्कृत में **समज** कहा जाता है। समज और समाज में यह अन्तर समझने योग्य है।

अब सोचना होगा समाज का सदस्य मनुष्य कौन और कैसा हो ?

क्या भौतिक रूप से दो हाथ, दो पैर, दो कान, दो ऑखें और जो सीधा होकर चले, उसे ही मनुष्य कहा जाना ठीक है ? यदि मनुष्य की यही परिभाषा माने तो फिर समाज को सतत क्षति पहुंचाने वाले, निर्मम हत्या करने वाले, चोर–डाकू, आतंकवादी, नक्सली, इन सबको भी मनुष्य ही कहना चाहिए। किन्तु सत्य तो यह है कि मानवता विहीन संख्या समाज कहलाने योग्य नहीं है। ऐसे व्यक्ति समाज के सदस्य कहलाने के अधिकारी भी नहीं हैं, जो दानवता का कार्य करते हुए, मानवता का चोला पहने हैं। ऐसी गलत वृत्तियों में संलग्न व्यक्तियों को मनुष्य कहना कोई भी ठीक नहीं समझता। बोलचाल की भाषा में जब कोई व्यक्ति किसी सामज विरोधी निन्दनीय कार्य में पाया जाता है तो यह कहते सुना जाता है, अरे, वो क्या आदमी है ? वो मनुष्य है क्या ? कोई आदमी ऐसा कार्य करता है क्या? अर्थात इस मानवीय चोले को ही मानना उचित नहीं है। एक उर्दू के शायर ने बहुत अच्छा लिखा है –

छिपे हैं जाने कितने जंगल बस्तियों के बीच।
आदमी तो आज शैतान के रूप में मिला है।।

जैसे कोई भवन है खाली है, जीवन प्रदान करने वाली सामग्री, अनाज, औषधि आदि या उसमें समाज को नष्ट करने वाली, नशीली सामग्री विध्वंशक वस्तुएं गोला–बारूद, शस्त्र, आर. डी. एक्स. कुछ भी रख सकते हैं। भवन तो दिया था परन्तु जिस प्रकार की सामग्री उसमें रखी, उसी से उसकी पहचान उसी अनुसार होगी। जो भवन समाज का रक्षक हो सकता है, वही भवन समाज का भक्षक भी हो सकता है। ठीक यही स्थिति इस मानव समाज की है, इसे जैसा बनाया जावेगा, उसी अनुसार इसकी पहचान होगी। इस मानव चोले में मानव–देवता–दानव कोई भी पाए जा सकते हैं। चोला तो साधन है, इसका स्वामी आत्मा है, स्वामी जैसे चाहे इस चोले का उपयोग कर सकता है। इस चोले की स्थिति का निर्धारण हमारी तामसी–राजसी–सात्विक प्रवृत्तियाँ करती है।

इसलिए वास्तव में सही अर्थों में जो मनुष्य मनुष्यता के गुणों को धारण करने वाला है उनके समूह को ही समाज कहना चाहिए। **एक और महत्वपूर्ण बात है। मनुष्य बनना पड़ता है, जन्म से मनुष्य पैदा हो गया यह विचार भ्रम है।**

संसार का सर्वप्रथम ज्ञान, सर्वप्रथम संस्कृति और ईश्वरीय ज्ञान वेद है। वेद की महत्ता को सनातन धर्म के अनेक ग्रंथों ने और दुनिया के हजारों चिन्तकों न, दार्शनिकों ने, जो विभिन्न जाति, सम्प्रदाय, देशों के हैं, उन्होंने वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार किया है, क्योंकि वह ईश्वरीय ज्ञान है। वेद जैसा प्रमाण हमें उपलब्ध है तो उसी का उदाहरण देना अधिक महत्त्वपूर्ण होगा।

वेद के एक मन्त्र में कहा –

तुन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि, ज्योतिष्मतः पथोरक्ष धिंया कृतान्।
अनुल्वणं वयत जोगुमुवामपो, मनुर्भव जनया दैव्यम् जनम्।।

– ऋ. 10/53/6

यह उपदेश मानव के लिए किया गया। संसार के ताने–बाने को बुनते हुए। अपने जीवन को सूर्य का गामी अर्थात सूर्य का अनुसरण करने वाला बनावें। ऐसा करके हम स्वयं मनुष्य बनें और दूसरों को भी मनुष्य बनावें।

ऊपर वेद मन्त्र में कहा जीवन की अपनी समस्याओं को, जवाबदारियों को, इच्छाओं को पूरा करते हुए भी सूर्य का अनुसरण करें। सूर्य का अनुसरण्ध करने का भाव यहां सूर्य के गुणों से है, सूर्य अन्धेरे का नाश कर सर्वत्र प्रकाश फैलाता है, सूर्य ऊर्जा प्रदान करता है, प्रातः उगते समय और ढ़लते समय एक जैसा वरूण रंग होता है, गन्दगी को नष्ट करता है, पानी बादलों का निर्माण करता है, अपनी किरणों से समुद्र के सारे पानी का वाष्पीकरण कर बादलों तक पहुंचाता है, जिससे अमुतरूपी बारिश के रूप में संसार के लिए पुनः प्राप्त हो जाता है। यह गुण मनुष्य के लिए वेद भगवान ने बनाए क्रमशः इसका तात्पर्य है हम अज्ञानरूपी अन्धेरे का नाश कर ज्ञानरूपी प्रकाश फैलावें! सूर्य के समान हमारा जीवन दूसरों को भी ऊर्जा प्रदान करे, जिस प्रकार अपनी किरणों से पदार्थों की गन्दगी, दुर्गन्ध सूर्य दूर कर देता है वैसा ही हमारा जीवन हो, हम भी अपनी आन्तरिक व बाहरी स्वच्छता बनाएं रखें। हम भी जहां कमजोरी दिखे, उसे दूर करें, खारे पानी को लेकर अमृत तुल्य जल जैसे सूर्य हमें दिलवाता है वैसे ही हम कटुता के व्यवहार को मधुरता में परिवर्तित कर दें, जैसे सूर्य प्रातः उगते और सायं ढ़लते दोनों समय वरूण रंग का होता है, वैसे ही हम जीवन में अति सुख व अति दुःख दोनों अवस्थाओं में एक जैसे गंभीर बने रहें।

मन्त्र का आगामी सन्देश हैं मन्त्र कहता है – **"मनुर्भव जनया दैव्यम जनम्"।**

अर्थात् – ऐ दुनियां के लोगों तुम स्वयं मनुष्य बनो और जब स्वयं मनुष्य बन जावो तो अपने समान दूसरों को भी मनुष्य बनावों।

उपरोक्त विचारों को आत्मसात करने के उपरान्त मनुष्य का जीवन एक सामाजिक व आदर्श जीवन बन सकता है। ऐसा व्यक्ति ही अपने साथ–साथ वह परमार्थ की भावना का भी संयोजन करेगा, अपनी प्रगति के साथ दूसरों की भी प्रगति का विचार करेगा।

ये है एक सामाजिक विचारधारा का सही चित्रण, यही समाज के प्रत्येक सदस्य का आदर्श है। समाज रूपी बेल का पोषण इसी प्रकार की मानवीय भावनाओं से संभव है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बहुत ही सुन्दर विचार इस व्यवस्था पर दिए हैं – **"प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।"** समाजवाद की, सामाजिक उन्नति की इससे अच्छी सरल परिभाषा कहीं पढ़ने–सुनने को नहीं मिली।

जब वर्तमान परिस्थितियों पर दृष्टि डालें, और चिन्तन कर सोचें कि, आज समाज की स्थिति क्या है ? तो पायेगें पद, पैसा, परिवार को महत्व देकर सामाजिक मूल्यों का उपहास हो रहा है। हम अपनी प्रगति, उन्नति, समृद्धि से हटकर दूसरों के लिए कितना सोचते हैं, उनको ऊपर उठाने में हम क्या प्रयास करते हैं, कितना सहयोग करते हैं ? यह विचार शनैः–शनैः समाप्त होते जा रहा है।

आत्मा की आवाज सुनेगें तो वह कहेगी ये सब तो हम नहीं करते। प्रश्न उठा यदि ये सब तो हम नहीं करते। तो फिर प्रश्न उठा, नहीं करते तो भी क्या सामाजिक हैं ? उत्तर – मौन। किन्तु सत्यता है, नहीं है।

आज स्वार्थ में पशुओं को हिंसा में हिंसक पशुओं को और विनाश की प्रवृत्ति से समाज को शोषित करने वालों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। ये धनबल, जनबल, कुर्सीबल से भले ही सामाजिक बने रहें किन्तु वास्तव में ये असामाजिक हैं, ऐसी प्रवृत्ति की उपेक्षा कर समाज को सावधान करना चाहिए, रक्षा करना चाहिए। अरे, समाज आपसी संगठन, सहयोग, एक–दूसरे के प्रति सद्भावना किसी के दुःख में दुःखी होना, किसी उन्नति में उसकी प्रसन्नता को बांटना, गिरे हुए को उठाना, अभाव में सहयोग देना आदि, विचारों की महत्वपूर्ण नींव पर बना है। ये उसके नियम हैं, उसके प्रत्येक सदस्य को सदस्य बने रहने के मापदण्ड हैं। जो इन सिद्धान्तों को नहीं मानता वह सामाजिक कहलाने का अधिकारी नहीं है, वह असामाजिक है।

मानवीय आदर्शो वाला ही समाज को व्यवस्थित रख सकता है, जिसके पास सामाजिक आदर्श नहीं व समाज को अव्यस्थित कर देता है, इसलिए उसे असामाजिक तत्व के नाम से पुकारा जाता है।

ऐसे असामाजिक तत्वों के कारण ही समाज पनप नहीं रहा है, शोषित है, भयभीत है, दुःखी है। समाज रूपी बेल इनके दुकर्मों से सूख रही है। जिस बेल में सुख, शान्ति, प्रसन्नता रूपी सुगन्धित पुष्प होना चाहिए, उनका जीवन भय, दुःख, असुरक्षा, चिन्ता ने ले लिया।

विडम्बना है, समाज रूपी इमारत में चारों ओर से आग लग रही है, किन्तु इसमें रहने वाले बेंखबर और गहरी नींद में सो रहे हैं।

शीर्षक की ओर पुनः ध्यान देवें समाज की बेल सूख रही है। आज आवश्यकता है उस सूखती हुई बेल को पुनः हरीभरी पल्लवित करने के लिए नैतिकता रूपी पानी की, संगठन–सौहाद्रता रूपी खाद की और दूषित विचारों से मुक्त वायु की। यदि ऐसा हुआ तो ही समाज सुरक्षित रहेगा अन्यथा **समाज और समज का** अन्तर मिट जावेगा।

जल ही जीवन है –

इसका सदुपयोग करें।

– जनहित में प्रकाशित

क च ट त प वर्गस्थ प्रभु

करूणाकन्दः खंगरूत्मान् धनानन्दः जगत्पिता।
कवर्गस्थ कृपावन्तः कर्मफल प्रदायकः।।

भाषार्थ –

क वर्ग – जो करूणाकन्द खं (आकाशवद्व्यापक), गरूत्मान् (गुर्वात्मा महास्वरूप) आनन्द धन जगत्पिता है, वह क वर्गस्थ कृपावन्त परमेश्वर हमारा कर्मफलं प्रदाता है।

चन्द्रश्छन्दः जगज्ज्येष्ठः झडंतिः सृष्टिवीणायाः।
च वर्ग स्थितो स्वामी चलाचल प्रदायकः।।

भाषाथ –

च वर्ग – जो चन्द्र (आहलाद प्रद), छन्द (सृष्टि में छाया, व्यापा हुआ), जगत में ज्येष्ठ एवं विश्व वीणा की झड्कारवत है, वह च वर्ग स्थित स्वामी हमें चलाचल सम्पत्तियों का प्रदाता है।

टंकपतिः प्रकृतेश्च ठक्कुर ओ3म् डिण्डिमः।
ढौकयन्ता साधकस्य ट वर्गो मोक्षदायकः।।

भाषार्थ –

ट वर्ग– जो प्रकृति परमाणुओं का कोषाध्यक्ष है, ओ3म् घोष स्वरूप ठाकुर (स्वामी) है, वह ट वर्ग स्थित प्रभु साधकों को निकट बुलाकर मोक्ष देता है।

तारकस्थः देव धाता निर्माता भुवनस्य च।
त वर्ग स्थितो प्रभुः में ताप नाश प्रदायकः।।

भाषार्थ –

त वर्ग – जो तारक जगत का तारणहार, थः–भयत्रायक (वाचस्पत्यं पृष्ठ 3403) देव, धाता तथा भुवनों का निर्माता है। वह त वर्गस्थ मेरा प्रभु ताप (त्रिताप) नाश कर्ता भी है।

पूषा फलाढ्यः बन्धुश्च भगवां मंगलमूलः।
प वर्गस्थ महादेवो ऽ अपवर्ग प्रदायकः।।

भाषार्थ –

प वर्ग– जो पूषा (विश्वपोषक), कर्म फलदाता, सबका बन्धु मंगलमूल भगवान है। प वर्ग स्थित वह महादेव अप वर्ग प्रदायक है।

– रमेशचन्द्र चौहान, इन्दौर

गाय सर्वोत्तम क्यों !

गौ और कृषि अन्योन्याश्रित हैं। इसीलिए महर्षि ने गोकृष्यादिरक्षिणी सभा नाम रखा था। गाय का दूध सर्वोत्तम क्यों हैं ? इसमें निम्नलिखित मुख्य विशेषताएं हैं –

1. गाय का दूध पीला और भैंस का दूध सफेद होता है। इसीलिए इसके दूध के विशेषज्ञ कहते हैं कि गाय के दूध में सोने का अंश होता है जो कि स्वास्थ्य के लिए उत्तम है और रोगनाशक है।

2. गाय का दूध बुद्धिवर्धक और आरोग्यप्रद है।

3. गाय का अपने बच्चे के साथ स्नेह होता है जबकि भैंस का बच्चे के साथ ऐसा नहीं होता है।

4. गाय के दूध में स्फूर्ति होती है। इसीलिए गाय के बछड़े व बछियॉ खूब उछलते कूदते फिरते हैं। भैंस का दूध पीने से आलस्य व प्रमाद होता है।

5. गाय के बछड़े को 50 गायों या अधिक में छोड़ दिया जाय तो वह अपनी माता को जल्दी ही ढूॅढ़ लेता है। जबकि भैंस के बच्चों में यह उत्कृष्टता नहीं होती।

6. गाय का दूध तो सर्वोत्तम होता ही है, साथ ही गाय का गोबर व मूत्र भी तुलना में श्रेष्ठ है। गाय का गोबर स्वच्छ व कीटनाशक होता है। गाय की खाद तीन वर्ष तक उपजाऊ शक्ति बढ़ाती है किन्तु भैंस की खाद तो एक दो वर्ष बाद ही बेकार हो जाती है और गौमूत्र का स्प्रे करके कीड़ों के नाश में भी उपयोग लिया जाता है।

7. गौमूत्र उत्तम औषधि है। आयुर्वेद के ग्रंथों में पचास से भी अधिक रोगों में इसका उपयोग किया जाता है।

8. कृषि के कार्यों के लिए गाय के बछड़े सर्वोत्तम हैं। भारतवर्ष में आज के मशीनीयुग में भी 96 प्रतिशत खेती बैलों से होती है।

9. गाय एक सहनशील पशु है। वह कड़ी धूप व सर्दी को भी सहन कर लेती है। इसीलिए गाय जंगल में घूमकर प्रसन्न होती है।

10. गाय के दूध में सूरज की किरणों से भी निरोगता बढ़ती है। इसीलिए वह अधिक स्वास्थ्यप्रद है।

11. गाय की अपेक्षा भैंस के बच्चे/भैंसा धूप में कार्य करने में सक्षम नहीं होते।

12. गाय की अपेक्षा भैंस के घी में कण अधिक होते हैं। जो कि सुपाच्य नहीं होते।

महर्षि बोधोत्सव पर –

आज समस्त आर्यजन महर्षि के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम को मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं, निश्चित ही आज का यह दिवस यदि महर्षि के जीवन में न आया होता तो पता नहीं करोड़ों–करोड़ों व्यक्तियों को सत्य मार्ग दिखाई देता या नहीं। करोड़ों–करोड़ों व्यक्ति पाखण्ड के दलदल से बाहर निकल पाते या नहीं। वर्षों से गुलामी की दास्तां में जकड़ी भारतमाता कभी मुक्त हो पाती या नहीं ! और जो सबसे अहम महत्वपूर्ण उपलब्धि हमें प्राप्त हुई है, वह सनातन संस्कृति की धरोहर वेद ज्ञान है, वह भी हमें प्राप्त होती या न होती। ऐसे अनेक बिन्दु हैं, जिनमें महर्षि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है और उसका प्रारंभ शिवरात्रि से हुआ। शिव का अर्थ कल्याणकारी होता है, निश्चित वह शिवरात्रि हम सबके व करोड़ों–करोड़ों व्यक्तियों के जीवन के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो गई।

महापुरूषों को याद करते हुए उनके माध्यम से कुछ विशेष दिन मनाये जाते हैं, लेकिन वह क्यों मनाये जाते हैं, समाज आज उसके महत्व को भूल चुका है और औपचारिताओं तक सीमित रह गया है। अंग्रेजी कवि लॉग फेलो ने एक महत्वपूर्ण बात महापुरूषों को याद करने के संबंध में बतायी है, जो बहुत ही उचित और प्रत्येक को अनुकरणीय है। वे लिखते हैं "Life of the great man are remind us....." अर्थात महापुरूषों को याद इसलिए किया जाना चाहिए कि हम उनके बताये मार्गों पर चलकर हमारे जीवन को चमकीला बनाए और इस दुनिया से बिदा लेते समय अपने कर्मो की छाप कर्म रेती पर छोड़ जाएं।

अब प्रश्न उठता है क्या हम ऋषि के बोधोत्सव, जन्मोत्सव अथवा निर्वाण दिवस को किस रूप में मनाते हैं। महर्षि ने जो कार्य किया था, जो उनके जीवन की अच्छाई हम आर्यों के लिए आदर्श बनी हैं, क्या उन पर हम चलते हुए महर्षि के कार्य को गति दे रहे हैं ? या अन्य व्यक्तियों की तरह औपचारिता ही निभा कर महर्षि की जय जयकार कर रहे हैं ?

यदि मेरे विचारों के कहे प्रथम स्वरूप को ईमानदारी से हम आत्मसात करते और महर्षि के बताये हुए उस मार्ग पर चलते और जो उद्देश्य था कि सम्पूर्ण विश्व में वैदिक विचारधारा का प्रचार प्रसार हो, सभी समाज को श्रेष्ठ बनाये, वह नहीं हो पाया। बहुत बड़ी जवाबदारी महर्षि ने हमारे कंधों पर सौंपी थी, लेकिन आज हम कहां खड़े हैं कितना महर्षि के विश्वास पर खरे उतरे हैं यह आत्मचिन्तन का विषय है।

आज की रात्रि महर्षि को तो सत्यज्ञान का सन्देश दे गयी और महर्षि ने उस क्षणिक घटना से संसार की विचारधारा को ही प्रभावित कर दिया। इतने कम समय में प्रचलित धारा के विपरीत जो अदम्य साहस महर्षि ने दिखाया वह इतिहास की घटना का एक नया अध्याय है। किन्तु आज हम

उस ज्ञान के सरोवर के पास बैठकर भी अतिरिक्त और अज्ञान पिपासा लेकर भटक रहे हैं। समाज का हर तबका हमारी ओर आशा भरी निगाहों से देखता था, महर्षि के मानवमात्र के लिए दिये गये अनमोल सन्देश का प्रभाव जनमानस के हृदय पटल पर गहरा पड़ा था, किन्तु हमारी अकर्मण्यता और उपेक्षा भाव से आज इसके बिलकुल विपरीत स्थिति हो गयी है। जो दूसरों को सहारा देते थे दूसरो को मार्गदर्शन देते थे वे स्वयं आज भ्रमित होकर चौराहे पर खडे हैं, यही आज प्रत्येक आर्य के मन की वेदना है।

आज सनातनधर्मी अनेक प्रकार के अन्धविश्वासों और भाग्य के भरोसे ईश्वर, धर्म और कर्म के नाम पर भटक रहे हैं। सनातन धर्म के स्वरूप का लोप होते जा रहा है। सनातनधर्म के स्थान पर नई–नई विचारधाराएं समाज में तेजी से प्रचलित हो रही हैं। सनातनधर्मी इन विचारधाराओं के सम्पर्क में होने से आपस में बंटते जा रहे हैं। सनातनधर्म पर विधर्मियों का आक्रमण शाम दाम दण्ड भेद हर नीति से हो रहा है। आम हिन्दू समाज सो रहा है। हिन्दू समाज का शोषण करके धर्म के नाम पर दुकानदारी चलाने वाले अनेक सन्त महात्मा उपदेशक कथावाचक हिन्दू समाज की इस व्यवस्था से बेखबर हैं और स्वार्थ में लिप्त हैं। ऐसे अवसर पर आर्य समाज की आज इस भ्रमित समाज को संभालने के लिए बहुत आवश्यकता है।

महर्षि का जीवन त्याग तपस्या परोपकार और सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए था। समाज में फैले अन्धविश्वास को दूर करने का उनका भागीरथी प्रयत्न रहा। अपने मार्ग पर वे इतनी दृढ़ता से बढ़ते गए कि उन्हें मौत का भय भी अपने पद से हटा नहीं सका। अपने प्राणों की आहुति देकर भी ऋषि इस सनातन संस्कृति के लिए ही अमर हो गये। हमारी अकर्मण्यता के पीछे आभास होता है, किन्तु हम उनके अनुयायी उनके इस बलिदान को ठीक से समझ नहीं पाए, उसका मूल्यांकन नहीं कर पाए। इसी कारण महर्षि के बताये मार्ग को इतना महत्व नहीं दे रहे हैं अन्यथा आज विश्व में वैदिक धर्म की दुन्दुबी बज गई होती।

कोई बात नहीं, जो बीत गया वो हमारे हाथ में नहीं है वो वापिस नहीं आ सकता, किन्तु जो बचा है उसे संभाला जा सकता है। अभी भी समय है बहुत कुछ अभी भी बचा है ईमानदारी से एक ऋषि भक्त बनकरे अपने को पहचाने, अपने गुरूवर के बलिदान का सम्मान करें, उनके प्रति यदि मन में सद्भावना है तो उनके बताये मार्ग पर चलते हुए उस कार्य को हम पूरा करें जिसके लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन दिया था। महर्षि को आज के दिन सत्य ज्ञान की प्राप्ति हुई थी एक नए मार्ग पर चलने का मार्ग प्रशस्त हुआ था। ईश्वर करें आज हमें भी उस ऋषि के मार्ग पर चलने का दृढ़ निश्चय प्राप्त हो जाए, हम भी उस कल्याणकारी मार्ग पर चलें, यही संकल्प व भावना इस बोधोत्सव को मनाने की सार्थकता है।

बोधकथा –

झूठ का त्याग – सौ सुख

सेठ शंकर दयाल नगर के एक बहुत बड़े रईस थे। नगर में उनकी कई कोठियॉ थीं जहां लाखों का व्यापार होता था। सेठ जी दानी भी थे। उनके घर पर कोई आता तो खाली हाथ कभी न लौटता।

सेठजी का एक ही पुत्र था। सेठजी तथा सेठानी के लाड़–प्यार के कारण तथा बुरी संगत के कारण बिगड़ गया था। धन की कमी नहीं थी। शराब की लत लगी थी, फिर वेश्याओं के कोठे पर जाने की लत पड़ गई। ज्यों–ज्यों आयु बढ़ती गई वह बिगड़ता गया। सेठजी का समझाना व्यर्थ गया। सेठ जी उसकी बुरी आदतों के कारण अत्यन्त दुःखी थे।

एक दिन सेठजी के कुलगुरू नगर में आए और सेठजी के घर पर ठहरे। सेठजी ने उनका भारी स्वागत किया। गुरूजी सेठजी के स्वभाव को जानते थे। परन्तु उस दिन उन्हें अनुभव हुआ कि मन से सेठजी अत्यन्त दुःखी हैं। उन्होंने पूछ लिया "सेठ जी ! क्या बात है ? आप कुछ परेशान प्रतीत होते हैं ?"

सेठजी ने कहा "गुरूजी ! आपका कथन सत्य है। मैं लड़के की ओर से परेशान हूं। एक ही लड़का है। परन्तु एक तो वह शराब पीने लगा है तथा साथ ही वह वेश्याओं के पास कोठों पर जाने लगा है। उसको समझाने पर भी समझता नहीं। आप ही कोई रास्ता निकालिए।"

गुरूजी ने कुछ विचार किया और फिर कहा "अच्छा हम प्रयत्न करेगें।"

उस दिन लड़का दोपहर भोजन के लिए घर पर आया तो मॉ ने कहा "गुरूजी आए हैं। पहिले उनको भोजन कराओ। तुम्हारे पिताजी तो काम से गए हैं। तुम्हें स्वयं भोजन करना चाहिए।"

इतने संस्कार अभी लड़के में शेष थे। गुरूजी के प्रति श्रद्धा बनी हुई थी। उसने हाथ धोए तथा थाल में भोजन लेकर गुरूजी के कमरे में जहां वह ठहरे हुए थे, जा पहुंचा और उनके सामने भोजन का थाल रख हाथ जोड़े प्रमाण कर बोला गुरूजी ! भोजन कीजिए।"

गुरूजी ने आशीर्वाद दिया और कहा, "बेटा ! हम भोजन नहीं करेगें।"

"गुरूजी ! क्यों ?"

"किसी को भोजन कराना अतिथि यज्ञ कहाता है। यज्ञ में पीछे दक्षिणा भी देनी पड़ती है। हमें भी दक्षिणा देनी पड़ेगी। हम भोजन उसी के हाथ से खाते हैं जो भोजन के पश्चात दक्षिणा दे।"

लड़के ने कहा "गुरूजी ! आप निश्चित होकर भोजन कीजिए। जो आप कहेगें वह दक्षिणा के रूप में दी जाएगी।"

"बेटा ! दक्षिणा वही होती है जो तुम अपने पास से दोगे। तुम्हारे पास तुम्हारा अपना क्या है ? यह धन–दौलत तो सब सेठजी का है न ?"

लड़का हैरान। क्या उत्तर दे ? गुरूजी ने पुनः कहा, "तुम्हारे पास तुम्हारा अपना जो है वह दो तो भोजन करूँगा।"

लड़के ने कहा "आप आज्ञा कीजिए। मेरा इस घर में कुछ भी तो नहीं। मैं क्या दे सकता हूँ ?"

गुरूजी मुस्कुराते हुए बोले, "हम जानते हैं तुम्हारे पास अपना क्या है।"

गुरूजी ! आज्ञा कीजिए। मेरा अपना जो भी मेरे पास है मैं सहर्ष दूंगा।"

"तो ठीक है। हमें अपना झूठ दान में दे दो। आज के पश्चात कभी झूठ नहीं बोलोगे। हमें यही वचन दो। यही हमारी दक्षिणा होगी।"

गुरूजी ! मेरे झूठ से क्या बनेगा ?

"यह देखना हमारा काम है। हमें तुमसे यही चाहिए। बोलो देते हो तो भोजन करेंगे अन्यथा हम आज भोजन नहीं करेंगे।"

"गुरूजी ! आज के पश्चात मैं कभी झूठ नहीं बोलूंगा। यह मेरा वायदा है।"

"यह सोच लो, यदि झूठ बोलोगे तो घोर पाप के भागी बनोगे।"

"आप निश्चिन्त रहें। हम व्यापारी लोग हैं। एक बार जो वचन दिया वह हम निभाते हैं।"

गुरूजी ने भोजन किया और आशीर्वाद देकर चले गए।

अपने दैनिक कार्यक्रम के अनुसार लड़का शाम को घूमने निकला तो शराब के ठेके पर जा पहुंचा। ठेके के बाहर व्यवसाय के एक परिचित अन्य सेठ मिल गए और पूछने लगे "छोटे सेठ इस ओर कैसे आना हुआ ?"

लड़का विचार करने लगा क्या उत्तर दूं। झूठ मैं बोलूंगा नहीं। गुरूजी से वाया किया है। यदि बोलता हूं तो घोर पाप का भागी बनता हूं और यदि मैंने सत्य कहा तो प्रतिष्ठा का प्रश्न खड़ा हो जाएगा।

सेठ ने पूछा "क्या बात है ? कहाँ जाना हो रहा है ? भई, यदि बताने की जगह नहीं तो न सही।"

लड़का लज्जित – सा घर को लौट गया।

स्वभाव वश रात्रि वह वेश्या के कोठे को जाने के लिए घर से निकला तो एक अन्य परिचित बाजार का व्यापारी मिल गया। उसने पूछ लिया, "छोटे सेठ ! इस समय कहां की तैयारी है ?"

लड़के के सामने फिर वही समस्या। झूठ वह बोलेगा नहीं और सत्य वहकह नहीं सकता था। परिवार की प्रतिष्ठा का प्रश्न था। यदि उसने गुरूजी से वायदा न किया होता तो झूठ बोल देता।

उस परिचित व्यक्ति ने पुनः पूछा "क्या बात है छोटे सेठ, इस समय कहाँ चल दिए ? क्या बताने [illegible]

लज्जित [illegible] को लौट गया।

अगले दिन भी कुछ ऐसा ही हुआ। आखिर लड़के ने बुराईयों को तिलांजलि दे दी। पारिवारिक संस्कारों से उसका झुकाव अब धर्म–कर्म की ओर होने लगा।

लड़के का पिता सेठ इतना प्रसन्न हुआ कि उसने दिल खोलकर अपना धन दान दक्षिणा में दे दिया।

विचार मंथन......

आत्म साधना की अलौकिक यात्रा है मौन

एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य से सम्पर्क का आधार है शब्द। शब्दों की इस अनन्त यात्रा में व्यक्ति–व्यक्ति से जुड़ता भी है और टूटता भी है। पर मौन की यात्रा स्वयं को जानने की यात्रा है, जिसमें केवल आनन्द ही आनन्द है।

प्रायः मौन का अर्थ न बोलना ही समझा जाता है। वास्तव में इसमें हाथ, ऑख व शरीर के अन्य अंगों से किए गए संकेतों का भी निषेध समाविष्ट है। मौन का अर्थ है बाह्य संवाद से पूर्णरूपेण परे होकर अन्तर से नाता जोड़ना। परमात्मा से सम्पर्क साधने का सेतु है मौन। निर्विचार, निर्विकार होकर स्वयं में लीन हो जाने की अलौकिक यात्रा का नाम है मौन। दिव्य शक्तियों को जागृत कर आत्मा के पावन दर्शन करने की प्रबल चेष्टा है मौन। मौन जीवन की बहुत बड़ी शक्ति है। बोलने से मनुष्य की शक्ति का व्यय होता है और मानसिक चिंतन बिखर जाता है। मौन से शक्ति चिंतन में लगी रहती है। मौनावस्था में मनुष्य ईश्वर प्रदत्त शक्तियों को पहचानता है, जिससे ज्ञान और ध्यान को नया आयाम मिलता है। धन से अधिक मूल्यवान है, शब्द शब्दों की कंजूसी मनुष्य को सुखी बनाने में सहायक है, जबकि धन का खर्च जीवन यापन के लिए अनिवार्य है। इसलिए शब्दों का विवेकपूर्ण उपयोग करना बुद्धिमत्ता है।

भाषण की सर्वोत्तम कला –

बोलना एक कला है तो नहीं बोलना अर्थात् मौन रहना भी एक कला है। जिसे बोलना नहीं आता, मौन से उसका यह दोष प्रकट नहीं होता। मौन भाषण की सर्वोत्तम कला है। साधु संतों की पहिचान और विद्वानों की शोभा है मौन। संसार में जो भी महान साधक, तत्व चिंतक, उत्कृष्ट साहित्य सर्जक हुए हैं, उनमें प्रायः सभी ने मौन की साधना की है। बिना मौन के ज्ञान में प्रखरता और वाणी में तेजस्विता नहीं आती है। मौन कर्मरूपी शत्रुओं से लड़ने का श्रेष्ठ शस्त्र है। हम मौन धारण करते हैं, परन्तु मौन का पूरा लाभ नहीं ले पाते, क्योंकि मौन में हम निर्विचार नहीं होते और संकल्प विकल्प युक्त रहते हैं।

सम्यक दर्शन प्राप्ति का मार्ग –

सम्यक दर्शन आत्म–साधना का मूल आधार है, जिसका अर्थ है सत्य और स्वच्छ दृष्टि। मन की ऑख का निर्मल हो जाना और मन से संसार की आकांक्षा का निकल जाना, सम्यक दर्शन प्राप्त करने में मौन सीमेंट का काम करता है। मैं यह यात्रा करता रहता हूं, एक बार आप भी इस अलौकिक यात्रा पर निकल कर देखें तो सही, वाणी से सुगंध आ जाएगी। आकाश सी ऊंचाई और समुद्र सी गहराई आ जाएगी, जिसने भी यह यात्रा की, उसके चरणों में इन्द्र और देवत्व झुका है। शब्द जीवंत हो उठते हैं। देखा मौन की महिमा। हम सोचते रह जाते हैं और इस अलौकिक यात्रा का आनन्द नहीं उठा पाते। मौन आत्मा का स्वभाव है। महावीर ने

बारह वर्ष तक इसी पहचान के लिए मौन साधना की थी। यह साधना वाचाल लोगों को नई दृष्टि देगी। मधुर शब्द जाल के आकर्षण में फंसे मानव को निःशब्द के प्रति आकर्षित करेगी, हर गन्तव्यहीन को सही गन्तव्य का पता देगी, आत्म साधना की इस अनूठी यात्रा को किए बिना हम अन्तर की शान्ति को नहीं पा सकते।

संयम का पाठ –

मौन हमें संयम का पाठ पढ़ाता है। संयम से शक्ति का संचार होता है। जहां शरीर संयम से देह निरोग एवं दीर्घायु होती है, वहीं वाणी संयम हमारी दशा और दिशा ही बदल देता है। हम जीवन जीने की कला सीख कर निर्भय, निराकुल हो शाश्वत सुख को पाने की ओर अग्रसर हो जाते हैं। जीवन अन्तर्मुखी होकर आनन्द की रस धारा प्रवाहित करता है। मौन मन का विश्राम स्थल है और सकारात्मक चिंतन का केन्द्र बिन्दु है। हमारी कार्यक्षमता में गजब की तेजी आती है। सर्व कल्याण, सर्व उत्थान की भावना के भाव प्रबल होते हैं। अतः मौन की यात्रा सभी यात्राओं का संगम स्थल है। जिसने मौन साधना की अलौकिक यात्रा कर ली, उसे अन्य यात्राएं करने की जरूरत नहीं है। इसलिए वाणी को चुम्बकीय शक्ति प्रदान करने के लिए, जीवन को सरल और सरस बनाने के लिए अन्तर में निरन्तर रस की धारा बहाने के लिए, सुख, शान्ति और आनन्द का रसास्वादन करने के लिए, आओ हम अपने वचनरूपी अनमोल रत्नों को व्यर्थ में न लुटा कर मौन की अलौकिक यात्रा को करते रहने का पावन संकल्प लेकर जीवन को सार्थक बनाएं।

Remember Allwage

Five golden principal of life :

सदा याद रखें : जीवन के 5 स्वर्णिम सिद्धान्त

1. Vedas are the Repertoire of knowledge
   वेद ज्ञान का भण्डार हैं।
2. Vedas are the divine massage of God.
   वेद परमात्मा का पवित्र सन्देश हैं।
3. Vedas are the very first knowledge of the world.
   वेद संसार का प्रथम ज्ञान है।
4. Vedas are the complete knowledge of the world.
   वेद संसार का पूर्ण ज्ञान है।
5. Vedas are the very first knowledge of Humanity.
   वेद मनुष्यता का ज्ञान है।

अथ मनु महिमा

मन से मनु ने मनन सिखाया बिना दर्प कन्दर्प किया।
मौन मनस्वी मुनि ने जग को मानव दर्शन पूर्ण दिया।
मनु से मनसिज हार गया, मनु से ही मानव महामना,
मनु से मान्य मुनीश्वर सारे दिव्य मनीष वितान तना।।

मनु ने मनोयोग सिखलाया ताकि मिले भवमय भंजन,
मनु ने पूरे हुए मनोरथ रत्न मिले जनमन रंजन।
मनु के मन्त्रों से ही मंत्री नरपति मान्य बने हैं,
मनु की कर्मव्यवस्था से भू पर धन धान्य बने हैं।।

जो अनुसंधित हुआ तर्क से वही धर्म शरधनु हैं,
सम्प्रदाय में जलते जग तेरा उपाय तो मनु है।
मनु है मूल पुरूष सबका पर मनु का मूल मनुर्भव है।
ऋचा ऋचा हैं प्रेम पताका जग की उन्नति सम्भव है।।

मनु को मान मान्य मानव दानव बनने से बचता था,
गुण कर्मों की कितनी सुन्दर अमर अल्पना रचता था।
अब तो मूक प्राणियों की ही कब तुम्हारे उदर बने,
मनु को भूल दनुजता के ये नग्न नाच के नगर बने।।

मनु के बिना कहां वेदों की महिमा मंडित होती,
कैसे दुष्ट दानवों की दृष्कृतियां दण्डित होती।
मनु न होते कैसे नारी पूजित पंडित होती,
मनु न होते तो हां सचमुच गीता खंडित होती।।

धर्म द्रोहियों देशद्रोहियों नीचों की करतूतें काली,
जय में मनु जाली रचना कितनी अधिक मिला डाली।
मनु को मूल रूप में मानव एकबार तो पढ़ लेना,
फिर चाहों तो चौराहे पर चढ़कर फांसी दे देना।।

कितने फुले फले फूलें कई भीम धराशायी होगें,
सद्‌गुण संस्कारों के जग में मनु के सभी शरण होंगे।
मनु ने काल नाप डाला है, मनु के ये मन्वन्तर हैं,
मनोजयी मनु कालजयी के कोटि–कोटि संवत्सर है।।

जब तक है यह अवनी अम्बर गंगोत्री गिरिमाल हिमा।
जब तक हैं मानव तब तक क्यों होगी इति मनु की महिमा।।

– रमेशचन्द्र चौहान, इन्दौर

वैदिक सुक्तियाँ

0 **सुशेवो राजा** (ऋ. 6.59.5)–सु सेवा करने वाला राजा है।

0 **विश्वा तरेम दुरिता** (ऋ. 7.32.15)–हम सब बुराईयों को त्यागें।

0 **सुगनो विश्वा सुपथनि सन्तु** (ऋ. 7.62.6)–हमारे सब सुपथ सुगमनीय हों।

0 **सूरः पश्यति चक्षसा** (ऋ. 9.10.9)–ज्ञानी ही ऑख से देखता है।

0 **अकर्मा दस्युः** (ऋ. 10.22.8)–कर्म न करने वाला दस्यु है।

0 **अनु वीरयध्वम्** (ऋ. 10.103.6)–निरन्तर पराक्रम करो।

प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरः चरितात्मनः।
किन्नु पशुभिस्तुल्यं किन्नु सत्पुरशैरीति।।

अर्थात् – हमें आत्म चिन्तन करना चाहिए कि कहीं मेरा जीवन पशु तुल्य तो नहीं है ? या फिर महापुरूषों के समान प्रगतिशील है।

कभी जीवन की बेलेन्स शीट भी बनाओं !

सभी व्यापारी, कम्पनियां और उद्योग धंधों में लगे व्यक्ति अपने व्यापार की सही जानकारी रखने के लिए बैलेन्स शीट बनाते हैं। इस बेलेन्स शीट से वर्ष भर किए गये कार्यों का परिणाम सामने आता है, व्यापार से संबंधित वर्ष में सारी बातें, कितना व्यय किया, किस–किस मद में किया, कितनी आय हुई, कितना लाभ हुआ और कितना बकाया है, यदि किसी का कर्जा चुकाना है तो कितना हैं, कुल लाभ या हानि कितनी आदि–आदि।

व्यापार का उद्देश्य लाभ कमाना है उस लाभ में निरंतर वृद्धि होती रहे यह भी लक्ष्य होता है। इस लाभ को और कैसे बढ़ाया जावे किन खर्चो को कम किया जा सकता है यह भी बेलेन्स शीट के अनुसार निर्धारित किया जाता है।

यदि व्यापार में घाटा हो रहा है तो भी वह समझ में आ जाता है कि इसके क्या कारण है, यदि अकारण व्यय बढ़ा है, व्यवस्था में कमी है, या फिजुल खर्ची बढ़ी है तो इससे समझ कर फिर व्यवस्थित प्रबन्धन कर सुधार किया जाता है और व्यापार को होने वाली हानि से बचा लिया जाता है।

यह बैलेंस शीट व्यापार का अर्थिक हिसाब किताब है जो व्यापार व कार्य क्षमता का सही मूल्यांकन करती है। इसके द्वारा स्थिति से परिचित हो जाते हैं कि सही दिशा में प्रयत्न है या कुछ गड़बड़ है। ऐसा होना भी चाहिए अन्यथा कुछ पता ही नहीं चल पावेगा कि व्यापार से हमें लाभ हो रहा है या हानि।

यह प्रयास आर्थिक जानकारी के लिए किया जाता है। इसमें बड़ी सतर्कता, प्रयत्न, कुशलता लगती है, जिस धन के लिए यह सब किया जाता है वह बहुत कुछ तो है सबकुछ नहीं है। यह अपने आप में भी कुछ नहीं हैं इसका महत्व तो इसका उपयोग करने वाले पर निर्भर है। मान लीजिए देश में करंसी छपती जावें किन्तु उसका उपयोग करने वाला कोई न हो तो करंसी का क्या महत्व रह जावेगा ? कागज के टुकड़ों से अधिक कुछ नहीं। इसलिए धन सम्पत्ती साधन हैं और साधन तब ही अस्तित्व में रहते है जब उनका कोई उपयोग करता रहे ।

समझिए 100 व्यक्ति किसी पार्टी में बैठे है उनमे से कोई भी किसी प्रकार का नशा नहीं करता है किन्तु उसी पार्टी में बेश कीमती शराब की बोतलें रखी हैं। यद्यपि शराब बड़ी महंगी है किन्तु इनकी कीमत उन 100 व्यक्तियों के सामने कुछ भी नहीं है, उनके लिए व्यर्थ की वस्तु है।

इसलिए केवल धन अपने आप में कुछ नहीं है। परन्तु आज व्यक्ति उसकी सुरक्षा ओर वृद्धी अपने से अधिक करने में लगा है। अपना स्वास्थ सम्मान, नैतिकता सब दांव पर लगाकर उसे आवश्यकता से बहुत अधिक होने पर भी और अधिक प्राप्त करने की होड़ में लगा है। यह धन नश्वर है एक समय के पश्चात इसका हम स्वयं उपयोग भी नहीं कर सकेगें। यदि उपयोग नहीं किया तो इसे यहीं दूसरों के लिए छोड़ जावेगें। फिर पता नहीं उस छोड़े हुए धन का कौन कैसा उपयोग करेगा।

धन की तीन स्थिति बतायी है दान, उपयोग या विनाश पूर्व की दो स्थिति से प्रायः समाज दूर है और इस कारण अंतिम स्थिति नाश (जो दान के या उपयोग के काम न आयी) उसकी ही प्रायः स्थिति देखी जा रही है। जो कुछ धन रात दिन मेहनत से अनेक प्रमाणों से कमाया है धन का भी पूरा उपयोग नहीं कर पाते, न कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह कि इस धन का लाभ स्थायी नहीं, इसका पूरा उपयोग हमारे लिए नहीं और अधिक से अधिक कुछ हिस्से का उपयोग हम अपने लिए इस जीवन तक ही वह भी स्वस्थ रहने तक कर सकते है।

इस पर कभी हमने विचार नहीं किया कि नश्वरवान भौतिक साधनों की प्रांप्ति के लिए पूरी शक्ति लगाते है पूरी सतर्कता रखते है उसे और अच्छे से अच्छा करना चाहते है। **किन्तु बहुमूल्य जीवन मूल्यों की कभी बेलेन्स शीट बनाने का प्रयास नहीं करते है।** इस मनुष्य जीवन के आय व्यय ऋण और फिजूल खर्ची पर कभी विचार ही नहीं किया। इस सर्वश्रेष्ठ योनी को पाकर हमने इसमें क्या पाया, क्या खोया, कितना हम पर ऋण है या पतन की ओर इससे हमें लाभ मिल रहा है या हानि ? कुछ पता नहीं। इसी ओर संकेत करते हुए एक श्लोक बड़ा महत्वपूर्ण है –

प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरः चरितात्मनः।
किन्नु पशुभिस्तुल्य किन्नु सत्पुरषैरीति।।

याद रखो इस पृथ्वी पर जन्म लेने वाला हर मानव ऋण लेकर जन्मता है। हम अनेक ऋणों से दबे है बहुत ऋण है हम पर, हमारे नामें बहुत कुछ लिखा है। फिर यह सोचना है कि इन ऋणों को चुकाने में हम जमा क्या कर रहे है ? उन ऋणों को चुका भी रहे है या नहीं ? इसकी बैलेंस शीट बनाना भी जरूरी है। हमें इन ऋणों को चुकाना होता है। सामान्य व्यवहारिक जीवन में कोई व्यक्ति कर्जा तो ले लेवे पर चुकाए नहीं तो उसे अच्छा नहीं माना जाता। समाज की निगाह से गिर जाता है। सम्मानजनक व्यवहार तो यही है कि हम पर जो किसी का कर्ज है उसे चुका दिया जावे।

हम पर माता–पिता, ऋषियों का, देवताओं का, इस समाज का, इस राष्ट्र का ऋण है। इन्हें चुकाना हमारी नैतिक जवाबदारी है, इन सबके हम पर बड़े उपकार हैं उनको न चुकाना कृतघ्नता कहलाती है, एहसान फरोशी कहलाती है।

इस ऋण को इनके एहसानों को हम कर्म के माध्यम से उतारने का प्रयास कर सकते हैं। जन्म से मृत्यु पर्यन्त उस सर्वशक्तिमान परमात्म देव की हर क्षण निरन्तर हम पर कृपा बरस रही है। जो ज्ञान सफल जीवन संबंधी राह हमें ऋषियों ने, विद्वानों ने बताई उसका आगे प्रसार करना उसे और अधिक फैलाना उनके ऋणों को उतारने का माध्यम है।

जिस समाज में हम रहते हैं, उस समाज ने हमें बहुत कुछ दिया है, सभ्यता, सुरक्षा, संबंध, जीवनोपयोगी साधन, संस्कार, संबल बहुत कुछ उससे हमें मिला है उस समाज के लिए कुछ अच्छा सोचना अपने कर्तव्यों का निर्वाह करना समाज का कर्ज उतारना है।

पारीवारिक ऋण हम पर है उस माँ का जिसने अनेक कष्टों को सहते हुए भी हमें जन्म देने के लिए उसके महान दुःखों को प्रसन्नता से सहा। पहली गुरू बनकर बोलना व सामान्य, व्यवहारिक, शारीरिक ज्ञान दिया, रिश्तों की पहचान करवाई। पिता ने अपनी पूरी क्षमता और योग्यता से पालन किया, संवरक्षण दिया। योग्य बनाने के लिए हर संभव प्रयत्न किया। हमारी उन्नति को अपनी उन्नति से अधिक महत्व दिया। तमाम उन पितरों का जिनसे स्नेह, मार्गदर्शन और सम्मान जनक पहचान हमें मिली। वह आचार्य जिसने समाज में रहने योग्य आजीविका चलाने के लिए योग्य बनाया। इन सबका हम पर ऋण हैं। क्या इनके लिए हम भी उतनी ही निष्ठा, कर्तव्य भाव व श्रद्धापूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं। यदि नहीं तो हमारे जीवन की बैलेन्स शीट हमें ऋणि ही बताते रहेगी, जमा की साईड खाली रहेगी, जो जीवन में घाटे की बात है। अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए ही हमारा यह लोक व परलोक सुधर सकता है। इसके लिए हमारे जीवन में किए गए कर्मों की बैलेन्स शीट घाटे की नहीं लाभ दिखाने वाली हो। यही जीवन का सदुपयोग है।

सत्येभिः सखिभिः शुचद्भिः। (अथर्व. 20.91.7)

मित्र सच्चे और पवित्र हों।

होली

होली के अवसर पर,
एक भ्रष्ट मन्त्री के घर पर।
होली मनाते हुए,
रंग एक–दूसरे पर लगाते हुए।।

एक सज्जन लाल रंग लेकर,
मन्त्रीजी की ओर बढ़े।
तभी दूसरे सज्जन बोले, जो वहीं थे खड़े।

बोले क्यों ये नकली रंग लगाते हो,
असल पर नकल चढ़ाते नहीं शरमाते हो।
अरे! चुनावों में इन्होंने असली होली खेली थी,
न जाने कितनों ने इनकी गोली झेली थी।।

खून का दरिया बहाया है,
तब जाकर ये पद पाया है।
इसीलिए हमारे मन्त्री की लाल रंग पहचान है।
यही तो, इनकी शान है।।

तभी हरा रंग लगाने को,
होली रस्म मनाने को,
एक सज्जन आंगे आए,
हाथ मन्त्रीजी की ओर बढ़ाएं।
तभी पी ए ने उसको टोका,
रंग लगाने से रोका।
पी ए ने कहा, भाई! हरे रंग का इनका,
सम्बन्ध पुराना है,
जानता इसे, सारा जमाना है।।

मन्त्रीजी को हरे रंग से, सख्त ऐलर्जी है,
फिर तुम, मानो न मानो तुम्हारी मर्जी है।

आदमी ने चिढ़कर कहा, भाई साहब
ऐसा क्या है, हरे रंग में।
मुझे लगता है आप,
झूम रहे भंग में।।

पी ए ने पांच साल पुरानी, उन्हें याद दिलाई,
वन मिनिस्ट्री के वन काण्ड की बात बताई।

कुर्सी पर बैठते ही जंगलों की,
इन्होने मिटा दी थी हरियाली।
जंगल नष्ट बताने को,
कागज बनवाए थे जाली।।

ये प्रश्न विधान सभा में उठा था,
हर शख्स इनसे रूठा था।

इसलिए, इनको पद छोड़ भारी कीमत चुकाना पड़ी।
हरियाली के कारण ही ये मुसीबत हुई थी खड़ी।।
इसलिए जब–जब, हरा रंग सामने आता है।
इनका अतीत, इन्हें सताता है।।

इतनी बात सुन, रंग केशरिया, शीशी में लिए,
एक और सज्जन, उस ओर बढ़े,
जहां मन्त्रीजी,
चमचों से थ घिरे खड़े।

इस बार मन्त्रीजी खुद बोले,
कृपया, ये रंग हम पर न ढ़ोलें।
ये साम्प्रदायिकता की निशानी है,
हमें अपनी सीट नहीं गंवानी है।।

ये रंग हम पर जैसे ही आएगा,
हमारे मतदाता का परसेन्ट घट जाएगा।
बदनाम हो जायेगें, साम्प्रदायिक कहलायेगें।
पार्टी हाईकमान रूठ जाएगी,
हो सकता है, अगला उम्मीदवार ही न बनाएगी।।

इसलिए कृपया केशरिया रंग न डालें,
और कोई रंग चाहे जितना लगालें।

इतना सुनते ही एक नवयुवक,
कीचड़ और काला रंग लेकर आया,
महफिल में एकाएक, सन्नाटा छाया।

सभी उसकी ओर देख रहे थे,
मीडिया वाले अपनी रोटी सेक रहे थे।
कुछ भले आदमियों ने, इसका विरोध किया,
कुछ ने युवक व मन्त्रीजी के बीच अवरोध किया।।
पर, युवक बड़ा साहसी व बुद्धिमान था,
मन्त्री के चरित्र का उसके पास प्रमाण था।
बोला, भाईयों ! मैं दोनों चीज जो,
अपने साथ लाया हूं।
मन्त्रीजी के निकट की हैं,
ये जान पाया हूं।।

इन दोनों से मन्त्रीजी का पुराना नाता है।
ये, इतिहास हमें बताता है।।

कीचड़ उछालना दूसरों पर खूब जानते हैं,
मास्टर माईण्ड है भाड़यन्त्र के, आप भी मानते हैं।
इन पर वर्षों से कीचड़ उछल रहा है,
आज मैं डालूं तो क्या बुरा हुआ है।।

सत्ता की आड़ और कुर्सी के दम पर,
अत्याचार करते रहे, सदा हम पर।
न जाने क्या–क्या कुकर्म किए,
शैतान के रूप में ही ये जिए।।

महकते बाग को विरान बना डाला,
इसलिए इनके मुताबिक है रंग काला।

वैसे इनके मुंह पर तो, पहले से कालिख लगी है।
क्योंकि हर बुराई, इनकी सगी है।।

इसलिए मुझे अपना काम करने दो,
काला रंग, इसके मुह पर मलने दो।

मुंह क्या इनका तो तन मन सभी काला है
इसमें नहीं कोई झूठ है।
इसलिए कीचड़ और काला रंग ही
इनको करता सूट है।।

– प्रकाश आर्य, महू

स्वाध्याय की महिमा

ओ3म् सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।

सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वतीं दाशुषे वार्यं दात्।। ऋ. 10/17/7

अर्थ – दिव्य गुणों और दिव्यता के पुंज परमात्मा की प्राप्ति के इच्छुक विद्या की आराधना करते हैं। अध्वर – हिंसा रहित शुभ कर्मों के अनुष्ठान के लिए मनुष्य विद्या की उपासना करते हैं और अधिक से अधिक ज्ञानार्जन करते हैं। पुण्यात्मा सरस्वती को पुकारते हैं क्योंकि यह उन्हें पवित्र बना देती है जो विद्या के प्रति (सरस्वती के प्रति) समर्पित होते हैं, उनके पास कोई कमी नहीं रहती है।

उस दयालु परमात्मा ने मानव जीवन को श्रेष्ठतम बनाने के लिए मनुष्य को वेदों का खजाना दिया है। किन्तु यदि किसी को बहुमूल्य वस्तु दे दी जावे और उसको उस वस्तु की विशेषताऐं न बतायी जावें तो वह व्यक्ति उस प्राप्त वस्तु से यथावत लाभ नहीं उठा पाता है। परमात्मा ने वेद ज्ञान देने के साथ–साथ वेद ज्ञान की महिमा भी बतायी है। जिससे संसार के सभी मनुष्य लाभ ले सकें। वेद विद्या के द्वारा ही मनुष्य अपनी कामनाओं की पूर्ति कर सकता है। इसीलिए स्वाध्याय पर विशेष जोर दिया गया है। योगदर्शन में महर्षि पतंजलि लिखते हैं – **"स्वाध्यायादिष्ट देवता सम्प्रयोगः।"** योग. 2/44 स्वाध्याय से इष्ट देवता (विषय) का साक्षात् होता है। अर्थात् जिस पदार्थ को चाहते हो उसकी प्राप्ति हो जाती है, क्योंकि विद्या (सरस्वती) वह शक्ति है जिसके द्वारा सब पदार्थों के साथ साथ संसार का सर्वोच्च पद प्राप्त होता है।

"विद्यया अमृतमश्नुते" यजु. 40/14 विद्या द्वारा मनुष्य अमृत की प्राप्ति कर लेता है।

"स्वाध्यायान्माप्रमदः" स्वाध्याय में आलस्य मत करो। **"स्वाध्याय योग सम्पत्त्यापरमात्मा प्रकाशते।"** योग. 1/28 व्यासभाष्य स्वाध्याय और योग से परमात्मा का साक्षात्कार होता है। **"वेदाभ्यासाद भवेद विप्रो"** नित्य वेद शास्त्रों से स्वाध्याय से ही ब्राह्मणत्व प्राप्त होता है और स्वाध्याय न करने से ब्राह्मण भी शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है। स्वाध्याय से बुद्धि पवित्र हो जाती है। जिस प्रकार घर को साफ करने के लिए रोज झाड़ू लगानी पड़ती है, कपड़े साफ करने के लिए साबुन लगाना पड़ता है, उसी तरह मन की मैल को धोने के लिए नित्य स्वाध्याय की आवश्यकता है। स्वाध्याय का अर्थ केवल पुस्तक पढ़ना ही नहीं है, इस विषय में महर्षि वेद व्यास जी योग दर्शन में स्वाध्याय शब्द का अर्थ लिखते हैं **"स्वाध्यायः प्रणवादि पवित्राणां जपो मोक्ष शास्त्र अध्ययनं वा"** आसन पर स्थित होकर ओ3म् और गायत्री का ध्यानपूर्वक जप तथा मोक्षशास्त्र (वेद दर्शन, उपनिषद आदि) का अध्ययन और चिन्तन स्वाध्याय कहाता है। महाभाष्यकार पतंजलि मुनि लिखते

हैं **"ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडंगो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च"**। द्विज स्वाध्याय न करने पर धर्म से पतित हो जाता है अर्थात् जाति बहिष्कृत होता है। इसलिए नित्य श्रद्धापूर्वक स्वाध्याय करना चाहिए। स्वाध्यायशील व्यक्ति को अनेकों उपाधियां प्राप्त हो जाती है। यथा – ब्रह्मचारी, ब्राह्मण, श्रोत्रिय, अनूचान, ऋषिकल्प, भ्रूण, ऋषि, देव आदि। अध्ययन से मनुष्य सर्वांगींण स्वास्थ्य प्राप्त कर लेता है शारीरिक और मानसिक बल मिलता है और आत्मा भी सशक्त हो जाता है। शतपथ ब्राह्मण के शब्दों में – **अपराधीनो अहरहरर्थान साधयते, सुखं स्वपिति, परम चिकित्सक भवति............प्रज्ञा वर्धमाना..........यशोलोक पक्तिम्।** स्वाध्यायी व्यक्ति पराधीन नहीं रहता, दिन प्रतिदिन धन (भौतिक और आध्यात्मिक साधनों) की वृद्धि और प्राप्ति होती है। ऐश्वर्य मिलता है, सुख पूर्वक सोता है, स्वयं का सबसे बड़ा चिकित्सक बन जाता है। आज कल के अधिकांश चिकित्सक वास्तव में न तो स्वयं सदाचार रूपी स्वास्थ्य प्राप्त कर पाते हैं और न औरों को सदाचार की शिक्षा दे पाते हैं। स्वाध्यायी व्यक्ति की बुद्धि पवित्र होकर प्रज्ञा हो जाती है तथा वह संसार में यश को प्राप्त कर लेता है, सबके हृदयों में निवास करता है अर्थात् सबका प्रिय बन जाता है। स्वाध्यायी व्यक्ति ज्ञान अर्जित करके विद्वान बनता है और विद्वान की संसार पूजा (सम्मान) करता है, नीति शास्त्र के अनुसार –

नृपत्वं च विद्वत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते।।

अर्थ – राजा से विद्वान की तुलना कभी नहीं की जा सकती, क्योंकि राजा तो अपने राज्य में ही पूजा जाता है किन्तु विद्वान संसार में हर जगह पूजा जाता है। इसलिए जैसे भोजन रोज खाते हैं, पानी रोज पीते हैं आदि वैसे ही स्वाध्याय भी नित्य आलस्य रहित होकर करना चाहिए। तभी दुःखों से छूटकर स्थिर सुख (आनन्द) की प्राप्ति हो सकती है। इत्योम्

– सुरेशचन्द्र शास्त्री
उपदेशक–म. भा. आ. प्रति. सभा
मोबाईल – **9165038356**

सभी समाजों के लिए विशेष

कृपया, अपने समाज का निर्वाचन 15 मई तक करवाकर सभा को इसकी सूचना व प्रतिनिधि चित्र भरकर भेजें।

सदस्यों व सभासदों से मासिक शतांष राशि पूर्व निश्चयों के अनुसार प्राप्त करें। समाज के सदस्यों को वैदिक रवि के ग्राहक बनाइए, ताकि वैदिक रवि प्रत्येक घर तक पहुंच सके।

आदिवासी क्षेत्र में 2 दिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

ग्राम पीपलखोटा झाबुआ में 2 दिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम का विशाल आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें हजारों की संख्या में आदिवासी क्षेत्र के महिला – पुरूषों की उपस्थिति रही। सनातन धर्म के विचारों से ओतप्रोत भजन, प्रवचन व आध्यात्म चर्चा को बड़े ध्यान से आदिवासी जनता ने सुना। यज्ञ में बड़ी संख्या में बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

आचार्य दयासागर, जीवनवर्धन शास्त्री, दिलीप आर्य, ब्रह्मचारी विश्वामित्र के अथक प्रयास से यह कार्य सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर भजनोपदेशक हरिओम आर्य, विनोद आर्य, सुरेश आर्य भी उपस्थित रहे। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से निःशुल्क साहित्य वितरण किया गया।

तीन उपयोगी बातं –

0 युवावस्था में बहुत कुछ करने का संकल्प करें।

0 वार्धक्य अवस्था में मुनिवृत्ति धारण करें।

0 मृत्यु के समय में धैर्य धारण करें। प्रस्तोता–**राजेन्द्र व्यास, उज्जैन**

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका का सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। समयावधि पूर्ण होने पर अपनी सहयोग राशि कृपया भेजें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य,पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान हैं, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

※ आर्य समाज के दस नियम ※

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – प्रकाश आर्य, महू

AMIT CHATURVEDI # 98262-71